श्री शिव स्तुतिः (वंदे शंभुं उमापतिं)

श्री शिव स्तुतिः (वंदे शंभुं उमापतिं)

वंदे शंभुमुमापतिं सुरगुरुं वंदे जगत्कारणं
वंदे पन्नगभूषणं मृगधरं वंदे पशूनां पतिं |
वंदे सूर्यशशांकवह्निनयनं वंदे मुकुंदप्रियं
वंदे भक्तजनाश्रयं च वरदं वंदे शिवं शंकरं || 1 ||

वंदे सर्वजगद्विहारमतुलं वंदेऽंधकध्वंसिनं
वंदे देवशिखामणिं शशिनिभं वंदे हरेर्वल्लभं |
वंदे नागभुजंगभूषणधरं वंदे शिवं चिन्मयं
वंदे भक्तजनाश्रयं च वरदं वंदे शिवं शंकरं || 2 ||

वंदे दिव्यमचिंत्यमद्वयमहं वंदेऽर्कदर्पापहं
वंदे निर्मलमादिमूलमनिशं वंदे मखध्वंसिनं |
वंदे सत्यमनंतमाद्यमभयं वंदेऽतिशांताकृतिं
वंदे भक्तजनाश्रयं च वरदं वंदे शिवं शंकरं || 3 ||

वंदे भूरथमंबुजाक्षविशिखं वंदे त्रयीघोटकं
वंदे शैलशरासनं फणिगुणं वंदेऽब्धितूणीरकं |
वंदे पद्मजसारथिं पुरहरं वंदे महावैभवं
वंदे भक्तजनाश्रयं च वरदं वंदे शिवं शंकरं || 4 ||

वंदे पंचमुखांबुजं त्रिनयनं वंदे ललाटेक्षणं
वंदे व्योमगतं जटासुमुकुटं वंदेंदुगंगाधरं |
वंदे भस्मकृतत्रिपुंड्रनिटिलं वंदेऽष्टमूर्त्यात्मकं
वंदे भक्तजनाश्रयं च वरदं वंदे शिवं शंकरं || 5 ||

वंदे कालहरं हरं विषधरं वंदे मृडं धूर्जटिं
वंदे सर्वगतं दयामृतनिधिं वंदे नृसिंहापहं |
वंदे विप्रसुरार्चितांघ्रिकमलं वंदे भगाक्षापहं
वंदे भक्तजनाश्रयं च वरदं वंदे शिवं शंकरं || 6 ||

वंदे मंगळराजताद्रिनिलयं वंदे सुराधीश्वरं
वंदे शंकरमप्रमेयमतुलं वंदे यमद्वेषिणं |
वंदे कुंडलिराजकुंडलधरं वंदे सहस्राननं
वंदे भक्तजनाश्रयं च वरदं वंदे शिवं शंकरं || 7 ||

वंदे हंसमतींद्रियं स्मरहरं वंदे विरूपेक्षणं
वंदे भूतगणेशमव्ययमहं वंदेऽर्थराज्यप्रदं |
वंदे सुंदरसौरभेयगमनं वंदे त्रिशूलायुधं
वंदे भक्तजनाश्रयं च वरदं वंदे शिवं शंकरं || 8 ||

वंदे सूक्ष्ममनंतमाद्यमभयं वंदेऽंधकारापहं
वंदे रावणनंदिभृंगिविनतं वंदे सुपर्णावृतं |
वंदे शैलसुतार्धभागवपुषं वंदेऽभयं त्र्यंबकं
वंदे भक्तजनाश्रयं च वरदं वंदे शिवं शंकरं || 9 ||

वंदे पावनमंबरात्मविभवं वंदे महेंद्रेश्वरं
वंदे भक्तजनाश्रयामरतरुं वंदे नताभीष्टदं |
वंदे जह्नुसुतांबिकेशमनिशं वंदे गणाधीश्वरं
वंदे भक्तजनाश्रयं च वरदं वंदे शिवं शंकरं || 10 ||

इति श्री शिव स्तुतिः |